समाज मनोविज्ञान की परिभाषाएँ (Definition of)

दूसरें विज्ञानों की तुलना में मनोविज्ञान को परिभाषित करना कठिन है, क्योंकि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (subject matter) तथा विधि (method) हमेशा बदलते रहते हैं। मनोविज्ञान में भी समाज मनोविज्ञान की परिभाषाएँ और भी कठिन हैं। इसका एक कारण यह है कि समाज मनोविज्ञान में बड़ी तेजी से शोध (research) होते रहे हैं और इसका क्षेत्र भी तीव्र गति से विकसित होता रहा है। दूसरा कारण यह है कि समाज मनोविज्ञान तथा वैयक्तिक मनोविज्ञान (individual Psychology) के बीच अंतर करना कठिन है। वैयक्तिक मनोविज्ञान का अर्थ वह मनोविज्ञान है जिसमें ऐसे मनोवैज्ञानिक विषयों का अध्ययन किया जाता है जिसका स्वरूप अधिक वैयक्तिक होता है। दूसरी ओर समाज मनोविज्ञान का अर्थ वह मनोविज्ञान है जिसमें ऐसे मनोवैज्ञानिक विषयों का अध्ययन किया जाता है जिनका स्वरूप अधिक सामाजिक होता है। अतः व्यवहारिक रूप से समाज मनोविज्ञान तथा वैयक्तिक मनोविज्ञान के बीच कोई कठोर सीमा-रेखा खींचना असंभव है। तीसरा कारण यह है कि समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र (Sociology) के बीच यहाँ संबंध है कि समाज मनोविज्ञान के अपवर्तक स्वरूप (exclusive nature) को निर्धारित करना कठिन बन जाता है।

Definition

उपर्युक्त कठिनाइयों के होते हुए भी समाजशास्त्रियों (Sociologist) तथा मनोवैज्ञानिकों (Psychologist) ने समाज मनोविज्ञान को परिभाषित करने का सफल प्रयास किया है।

इस दिशा में सबसे पहला प्रयास शेरिफ तथा शेरिफ (1948) ने किया। उन्होंने कहा कि समाज मनोविज्ञान का सम्बंध समाज में होने वाले मानव-व्यवहार से है। उनके अपने शब्दों में "समाज मनोविज्ञान सामाजिक उत्तेजना-परिस्थिति के संदर्भ में व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।" लेकिन इस परिभाषा से समाज मनोविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता है। इस परिभाषा से यह नहीं स्पष्ट हो पाता है कि समाज मनोविज्ञान का सम्बंध किन-2 सामाजिक परिस्थितियों से है।

Crutch & Crutchfield & Ballachey (1962) के अनुसार "समाज मनोविज्ञान सामाजिक मानव (social man) के व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।" एक ही व्यक्ति कई रूपों में व्यवहार करते पाया जाता है। वहीं कहीं आर्थिक मानव (economic man) के रूप में व्यवहार करते पाया जाता है, कहीं राजनीतिक मानव (Political man) और कहीं सामाजिक मानव (social man) के रूप में व्यवहार करते पाया जाता है। समाज मनोविज्ञान का सम्बंध सामाजिक मानव से है अर्थात् उस मानव से है जो सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में कोई व्यवहार करता है। उसका यह सामाजिक व्यवहार संगठित (organized) तथा उद्देश्य लक्ष्य या निर्देशित (goal directed) होता है। इसलिए क्रेच, क्रचफील्ड एवं बैलेची ने समाज मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि "समाज मनोविज्ञान समाज के व्यवहार का विज्ञान है।" इनके द्वारा दी गई परिभाषा में व्यवहार शब्द का इस्तेमाल व्यापक अर्थ में किया गया है, और जिसमें व्यवहार तथा अनुभव दोनों शामिल है। दूसरे शब्दों में "Social Psychology may be broadly viewed as the science of the behaviour of the individual in society." लेकिन यह परिभाषा से भी समाज मनोविज्ञान का स्वरूप पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाता है। इस परिभाषा से न तो यह स्पष्ट हो पाता है कि सामाजिक व्यवहार किसे कहते हैं और न यह कि सामाजिक परिस्थितियाँ कौन-2 सी हैं। असल में यह परिभाषा इतनी संक्षिप्त है कि इससे समाज मनोविज्ञान का व्यापक क्षेत्र स्पष्ट नहीं हो पाया है।

- Chaplin (1975) के द्वारा दी गई समाज मनोविज्ञान की परिभाषा अधिक स्पष्ट एवं समग्र है। उनके अनुसार समाज मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन दो सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है - अपने समूह के अंदर तथा दो समूहों के बीच। व्यक्ति जिस समूह का सदस्य होता है, वह उस समूह के लोगों के साथ व्यवहार करता है। इसके

Social Psychology is that branch of Psychology that concentrates on any and all aspect of human behaviour that involve persons and their relationship to other persons, groups, social institutions and to society as a whole."

यह परिभाषा समाज मनोविज्ञान के स्वरूप (nature) तथा इसके क्षेत्र (scope) को स्पष्ट करने में अधिक सफल है। अतः यह परिभाषा अन्य परिभाषाओं की तुलना में अधिक सरल (comprehensive) तथा संतोषप्रद (satisfactory) है। इसके विश्लेषण (analysis) से समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं:—

(i) समाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो एक ओर शुद्ध मनोविज्ञान है और दूसरी ओर व्यवहारिक मनोविज्ञान (Applied Psy) की शाखा है। इसका अर्थ है कि यह मनोविज्ञान शुद्ध मनोविज्ञान तथा व्यवहारिक मनोविज्ञान दोनों की शर्तों को पूरा करता है।

(ii) समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु व्यक्ति का वह व्यवहार है, जो सामाजिक परिस्थितियों में होता है। सामाजिक परिस्थितियाँ चार प्रकार की होती हैं। (क) व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच (ख) व्यक्ति तथा समूह के बीच, (ग) व्यक्ति तथा सामाजिक संस्था के बीच (घ) व्यक्ति तथा सम्पूर्ण समाज के बीच। इन चारों परिस्थितियों में होने वाले व्यवहारों का अध्ययन समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

(iii) इस परिभाषा से स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक है। व्यक्ति चाहे दूसरे व्यक्ति के प्रति व्यवहार करता हो, प्राथमिक समूह के प्रति व्यवहार करता हो, द्वितीयक समूह के प्रति व्यवहार करता हो, चाहे सम्पूर्ण समाज के प्रति व्यवहार करता हो, उन सभी व्यवहारों का सम्बन्ध समाज मनोविज्ञान से है।

(iv) समाज मनोविज्ञान में जिन सामाजिक क्रियाओं अथवा सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है वे संगठित (organised) तथा उद्देश्य पूर्ण या निर्देशित goal directed) होती है। पारस्परिक क्रिया या सामाजिक व्यवहार वास्तव में व्यक्ति के संवेगों (emotions), विचारों (memories), संज्ञानों (cognitions) आदि का संगठित परिणाम है। यह संगठित व्यवहार वास्तव में उद्देश्यपूर्ण होता है। जैसे - किसी भिखारी को भीख देना अथवा मुख्यमंत्री या पंडित का सम्मान करना भी उद्देश्यपूर्ण व्यवहार है।

(v) समाज मनोविज्ञान का मौलिक सम्बंध व्यक्ति से है, उस व्यक्ति से है, जो समाज में रहता है। यहाँ सामाजिक व्यक्ति मानव (social man) का अध्ययन किया जाता है और ऐसे सम्प्रत्ययों (concept) पर बल दिया जाता है जो वैयक्तिक व्यवहार के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। इस अर्थ में समाज मनो० समाजशास्त्र (sociology) से भिन्न है क्योंकि समाजशास्त्र में समाज का अध्ययन किया जाता है और ऐसे सम्प्रत्ययों (Concept) पर बल दिया जाता है, जो सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन से प्राप्त होते हैं।

(vi) समाज मनोविज्ञान का मौलिक उद्देश्य सामाजिक व्यवहार की इकाई (unit) अर्थात अन्तर्वैयक्तिक व्यवहार - घटना (inter personal behaviour event) का अध्ययन करना है। इसी घटना के द्वारा समाज परिस्थितियों के होने पर भी भिन्न व्यक्तियों के व्यवहार भिन्न-2 हुआ करते हैं।

समाज मनोविज्ञान से सम्बंधित उपर्युक्त बातों के आधार में बेरोन तथा बिर्ने (2005) के द्वारा समाज मनोविज्ञान की परिभाषा अधिक सरल तथा संतोषजनक है। अके अनुसार "समाज मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक ढंग है जो सामाजिक परिस्थितियों में वैयक्तिक व्यवहार एवं विचार के स्वरूप के कारण तथा कारण को समझने का अन्वेषण या अनुसंधान करता है"।